

312.
Mānsakuti
yajña

अथ मन्सकुति
329 I

ARCHIVES

धर्मदत्तजिनसूक्तः दधनारि समन्तात्का कल्याणविना सकलजनप
 पविशाम नकार्थनावे पूजाः गुरुकुम्भानि विदधतु यजमानाश्च पूजागर्तुः कुरु मित्त
 ॥ ॥ धनसिमनयानयावक ॥ रुगाग्निनाशन ॥ ॐ सर्वपापविघ्निमात्मनः
 भिक्वः हं रुद्रस्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ दानपत्रं कुजमानस्य यथा भक्तकुरु लसं
 पकामार्थं ॥ स्वस्तिवाक् ॥ ॐ अग्निस्त्वापन हल २ स्या हं ॥ ० ॥ ॐ सद्य हल वज्रं
 जनं ॥ ॥ धनश्चान ॥ गुरुहलिनाग्निं मध्यं कान्तं यजमानं वाः न इ प
 विवकात्रं जाताग्निमगुलं ग्रीकाला रुवपीनवर्गं मकमूरं वपुर्हं वा म

दलुकमगुवधवं सद्य ववकं दाकमालाधवं पीनास्य वारु वसं यज्ञाय वी
 तं जिनगुं जदामकूटधवं श्रीवज्रसत्वालं कर्ममोलिनं समयाग्निं विराद्यः
 ॥ ॥ ॐ कालस्य वमहात्म्यं हृदयं यद्यवस्तिगाः गस्माद्विधविन्यस्य ह
 गत्सकूपं वमं धवं ॥ ज्ञानं आगिमयं कुरु संगाथास्तुतिमात्रं गामकुरु न
 कुरु न ज्ञानाग्निं क्षान्तिवृषकं ॥ हस्तदहनिपापानि दीर्घमात्रं यदोयनी ॥ आया
 यत्प्रकोवापि विविधाया वराननु ॥ गस्तदं यदमं क्षानं गस्तानं वज्रदध
 ना नालिमक्षस्तिर्गपमं ॥ दद्यादिसदवगा ॥ यप्रवदार्कमध्यस्तुः वीजं ॐ

कावसमं नादविन्दुकलागीमं। वाधिरुताननलाधिवि॥ ॥ॐ॥ अथदिमहा
नदवर्षिहृदिउः सन्निदितावस्वाहा॥ ॐ॥ यन्ननरुताननिवितावाः॥ ॐ॥
आः दक्किं वाउमूजागणनेजाअनयाय॥ ॥ॐ॥ अग्नादिषादिपवि
षाविषमहाप्रियदवाकवावाहनायह॥ ॐ॥ उः हं वं हंः समयस्त्वंसमय
मिति॥ ॥ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ गंखलंखनहाय॥ ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ वज्रनः
भिक्षान॥ ॥ॐ॥ अग्नेयवस्कावायअर्घ्यपनिहृत्वाहा॥ मूर्ध्नि॥ ॐ॥ अग्ने
यवस्कावायपाशंपनिहृत्वाहा॥ पादौ॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावायपाशंपनि

हृत्वाहा॥ वक्र॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावायआवमनंपनिहृत्वाहा॥ सर्वगम॥
ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ ३॥ पचगन्धनलयन॥ ॐ॥ यन्ननसमयाग्नि॥ ॥ॐ॥ सर्वग
मगमकायविष्मधनस्वाहा॥ कलगन्धनहाय॥ ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ पच
गय॥ ॥स्वरावधुष्टा॥ पाशादि॥ स्नानवाय॥ ॐ॥ कलिमायस्वाहा॥ ॐ॥
कलिमायस्वाहा॥ ॐ॥ दीपकालायस्वाहा॥ ॐ॥ मानिरुदायस्वाहा॥ ॐ॥ पूरुहृदाय
स्वाहा॥ ॐ॥ अग्नेयस्वाहा॥ ॐ॥ गजकवावजपृथंपनिहृत्वाहा॥ पूजालास्यास्तुति
॥ ॥ वज्रसंवीजनिर्जामं पीनवर्णमहाकलीपीताम्बवधनारंजा अग्ने

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निंदयात् ॥ ॥ उं अः स्वाहा ॥ समिधामभन ॥ उं अग्रयस्वाहा ॥ ३ घृणदा
य ॥ ॥ धनम् आदमघुनसथू दंदाय ॥ उं अक्रायस्वाहा ॥ अर्कसि ॥ १ ॥
उं वज्रसामायस्वाहा ॥ यलागसि ॥ २ ॥ उं वज्राभीजायस्वाहा ॥ षडिसि ॥ ३ ॥
उं वज्रवृद्धायस्वाहा ॥ अपामार्गसि ॥ ४ ॥ उं वज्रकुर्वमायस्वाहा ॥ उत्तसि ॥ ५ ॥
उं वज्रयज्ञायस्वाहा ॥ इन्द्विलसि ॥ ६ ॥ उं वज्रमणिश्यायस्वाहा ॥ मणिकषुसि ॥
७ ॥ उं वज्रबाधिबृक्षायस्वाहा ॥ ८ ॥ वलंगनसि ॥ ९ ॥ उं वज्रवनायस्वाहा ॥ पिना
कसि ॥ १० ॥ उं वज्रवीजायस्वाहा ॥ वस्तनसि ॥ ११ ॥ उं वज्रवनूमयस्वाहा ॥

धियं गुं ॐ आः दर्मनरुताय स्वाहा ॥ धूनकावस ॥ ॐ आः गिरुताय स्वाहा ॥ लि
 रुता ॥ ॐ आः मधुगिरिजाय स्वाहा ॥ वयवस ॥ ॐ आः हूं जूं जूं मूंः लोमां पां जूं स
 र्व्वीहिं जूं स्वाहा ॥ स्वाधीदिदाय ३ ॥ ॥ अग्निहिमानयायुदहिगवर्त
 वामावर्तनदायक ॥ ॐ श्रीवज्रसत्त्वआद्यादय २ हूं हं न हं न हूं रुद्र स्वाहा ॥
 शुभाङ्गि ॥ दानपत्रं जजमानस्य गत्वा कुरु लसं पापकामार्थं ४ श्रीश्रीध
 र्माष्टुवागीश्वररुद्रावकस्य वर्षवन्धनकलगावर्जनं कुरु लं रुनिमित्तार्थं यथ
 माङ्गि ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ॐ अं नमो आदीप्यादीपविषाविषमहाशिये रुद्राय क वा २

माथ स्वसिखाहा

हा॥मकु॥नवकुवीहिदाय॥ ॥धन॥नगावंकनाचमनादिकंकृत्वाला
 कारुनक्षानाग्निरिवाद्यः कालाकालाग्नेयदाशुहृदिकमलवन्द्यासनाः
 पविमधुलाधिपनिवीरुनिषान्नविद्रवीरुपविभामनमधुलाधिपनिसमा
 दलयविश्वः॥ज्ञानसत्यचक्रांकुम्भादिरिवाकृष्णवर्णवद्वासनायावी
 नमिवसमलसत्त्वसहकीकृत्वाअरिपिंशपाकृगार्धमाशार्चमनादिकंकृत्वा
 श्रुत्यात् ॥ ० ॥धनदयुलियाखानवाय॥आकर्षणयादंखानवाय॥पूजा
 लास्यामुनि॥नर्परा॥धनमूनमकुननवकद्वय॥हृदयमकुनखावीहि
 × गीतनिनित्राय ×

द्वय॥ ॥धनक्षानाह्निविय॥उंदानपकंऊऊमानस्य×स्वरिवायू×उंअ
 ग्न्यादीपादियविषाविषमहाग्नियहवाकवावाहनायऊऊमानस्यमगुल
 क्षानाह्निगृह२हंरुदुत्वाहा॥कुमथियक॥पूजालास्यामुनि॥नर्परा॥०
 ॥ ॥ॐनिक्षानाह्नि॥ ॥देवपूजा॥मकुह्निविय॥कालास्यापूजा
 पुनिष्ठादमसादमकर्ममानाह्नि॥धनदिगवलिविय॥काधवनिविय
 ॥ ० ॥उंधनमीधनमीपर्थसनिप्रहंऊनिविधमनिकिंपूवृषसकलसा
 गवगुह्यग्वनगयाववमीसावंगुपाफदानपकंऊऊमानस्यगानिस्वस्त्यकु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥ अथ ॥

ॐ नमः शिवाय नमः

नर नर नर नर नर नर नर नर
नर नर नर नर नर नर नर नर

॥ ॐ वज्र धूप जाला ॥ धूं ॥ ॐ वज्र ला के जो स्वाहा ॥ दीप ॥ ॐ वज्र पिष्टिकाय
 स्वाहा ॥ पंचपर्वकां ॥ ॐ वज्र पूग नाम्नाय स्वाहा ॥ ग्वय ग्वान ॥ ॐ स्वस्ति मूला
 य स्वाहा ॥ तु. गकि ॐ स्वस्ति ॥ ॐ वज्र प्रिय नमो य स्वाहा ॥ प्रियंगु ॥ ॐ सर्व नागय
 ममनाय स्वाहा ॥ ऊरु उषधि ॥ ॥ ॐ वज्र वसंक नाय स्वाहा ॥ कसूम ॥ ॐ सर्व
 वलाक नाय स्वाहा ॥ मकपूष ॥ ॐ वज्र वीज राय स्वाहा ॥ सुमुख ॥ ॐ सर्व कर्म कति
 य स्वाहा ॥ नूक म ॥ ॐ ह व २ हं रुद्र स्वाहा ॥ सिद्धाय ॥ ॐ कनू २ सर्व कार्य सिद्धि म
 ददाय स्वाहा ॥ कंकूम ॥ ॐ मद २ सर्व इयान न स्वाहा ॥ कर्पू ॥ ॐ वज्र राय

हं स्वाहा ॥ नक वन्दन ॥ ॐ ऊय २ हं रुद्र स्वाहा ॥ श्रीस्व मु ॥ ॐ हि वस्थ पद स्वाहा ॥
 दास वकं ॥ ॐ सर्व वल पद स्वाहा ॥ नसा वकं ॥ ॐ समय सर्व जाल य स्वाहा ॥ अ
 गुनी ॥ ॐ मधु प्रिय स्वाहा ॥ जिमधु ॥ ॐ शिकुः २ सर्व मऊ स्वाहा ॥ शिकुः ॥ ॐ आः हं
 गिरु लाय स्वाहा ॥ गिरु ला ॥ ॐ सर्व संयोग साध य स्वाहा ॥ गुरु वि ॥ ॐ कनिध नि
 सर्व कर्म सिद्धि कनू स्वाहा ॥ झाडू हल ॥ ॐ आद गन रुलाय स्वाहा ॥ धूकाल म
 ॐ वज्र व स्वाहा ॥ वयसि ॥ ॐ वजां पूष स्वाहा ॥ इर्वा क मु ॥ ॐ सर्व पूष रु ल
 ॐ आः हं रुद्र स्वाहा ॥ सर्व ऊया ॥ ॐ शिकाय क वस दास मय स्वाहा ॥

व न ल ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्र सर्व कि ॥ स्वाहा ॥

ॐ वज्र ॥ ॐ मधु ॥ स्वाहा

ॐ वज्र ॥ ॐ मधु ॥ स्वाहा

ॐ वज्र ॥ ॐ मधु ॥ स्वाहा

ॐ वज्र ॥ ॐ मधु ॥ स्वाहा

लयपू. नेव ऊनस्यमगुल. वसन्ति सर्वदवानां. वरुणकामनार्थकः दिग्भास्त्र
 स्त्रिकलेदिवां मर्गत्वात्तार्थसाधकं. ॐ दंपतीगंव वसं घनत्वं. लुगनसस्यनव
 हायाकृत्यस्त्रिस्त्रिहा ॥ ४ ॥ यदि कुरुदसुखं दवानिष्टुसर्वदा. वरुणामिभ्य
 यकृत्वा. भक्त्यस्त्रिद. भसद ॥ नन्दिक. भामहाकाल. कार्तिकयाग. गम्यनः ॥
 हेनवामागुकादूर्ग. विद्यादवामहर्दिका ॥ वरुणामिमहावली. कालकर्मि
 महावला. गथाधन्यामहालाग. यप्रकृन्तुलीभवत् ॥ ममिबूजापूष्यदति. सर्व
 भूकभीचपिमीला. वरुणमहादवी. वृद्धाकिनिकनायकाः ॥ हावमीस व

प्रतापकथागर

स्वमीदवी. लक्ष्मीसिद्धन्वमीसूना. ऊऊमानस्यममसर्वसत्त्वानां वरुणाय
 कामार्थ. सर्वदवस्यः स्त्रिस्त्रिहा ॥ ५ ॥ श्रीवृद्धधर्मसंघादि. रुगवनः ॥ भ
 क्तमूनि. वज्रमवाधिसत्त्वादिन. कामनार्थसर्वमृषिभा. श्रीलयज्ञरूपक
 य. कुरुमिष्टिद. भस्त्रिगा. वादभदोवपयुक्त. स्त्रिहादवाजिनागनाः ॥ नसर्व
 दवलाकाय. स्त्रि कुरुलकामार्थस्त्रिस्त्रिहा ॥ ६ ॥ नपालधर्मनिरुमी
 मरुथाधनरुपिना. कायुवगनावासा. लाकना. धनपालिका ॥ वसन्ति सर्व
 लोकानां दीर्घायुनागनाभन. धन्यादिधनसंवृद्धि. एवमुसंगलंसदा ॥ का

मासक स्थि र्गता वा वा ^{अथ} ना इह धर्मे च क द नि उ र ह ^अ दीना मद मान रि ग दि त म ध ^ए ला ० समा ॥

तव वरु मघा ^{अथ} रूपा ^{अथ} वनी मदीः नि वृत्या मं म हा सा हं स रि कं रं वं
कु वं ॥ व द्वा की ज पु दा ग म वा वृक्षा सर्व स वा व वा सर्व ला का स वृ लि स्ता र व रु
धर्म सा धि नः ॥ मा शु क स्थि दू वा या वा ^{अथ} वा रू ^{अथ} व र कः उ वि डा रू ^अ म
दी ना मद मान रि ग वि दः ॥ सर्व सत्वा समा वा वा य वि शु द्ध रि म लु ला ॥ ऊ ऊ मा
न स्य म म सर्व सत्वा नां ^{आ के ग्य त मा} द मा दू नि गृ क २ स्त रि स्ता दा ॥ ॥ [॥] ह य मा व न
सं व कू व वा दि द म दि न ॥ रु व न व स कि द वे ^{अथ} सर्व वि धि द न पु दा ॥ ने मृ कि ^अ म
पु या ना नां य जि ना वे म ^अ द मः ॥ आ दि र्वा दि य हा गं ^{अथ} वा कि का न कृ ज नि च ॥ न न

म ३ ए ३ ग म न म प ३ य ३ ग ३ दि म ३ व ३ दि को म ३

कृ पा य हा म नि नि र्वा धि रु त सं पु दा ॥ उ त्था य ना म हा रा ग म रु न स रु स र वा द य
॥ ऊ ऊ मा न स्य म म सर्व सत्वा नां व सर्व वि शु य म म नू गृ ह दा ष मृ त् ^{अथ} म नि स्त
स्ति का मा र्थ न व गृ ह सः स्त रि स्त रि हा ^{ने वे ग द यो ग} ॥ सर्व षां द व ना नां दि रु ना नां व
दि ने वि र्वा रु न ना ^{अथ} रु म ना य त थ ध र्म न या पि च ॥ ऊ ग ना मि न य सर्व सा
मृ त्वा ना ग म रु वः ॥ वि ग कि का य स्या रु रु षा वि धु स्ता वि ल सी रु ना ॥ म रु वि
रु ष ना या स सर्व स्त रि क वि य नि ॥ मी ल लि ना यू नि म हा व म म नि ग ला म ना
व म म हा न ग वा म हा धि प नि ग्री २ ऊ य व स व हा र्द न सा ह व स्य अ र व रु ऊ य

व ३ स ३ कि ३ स्ता ३ वा ३ ॥ न ३ म ३ म ३ वा ३ को ३ न ३ कृ ३ ज ३ य ३ ग ३

यथापरवप्रसिद्धिकामार्थस्वस्तिसाहा ॥ ८॥ वेद्यवत्समीकृत्वाधनमः
 दात्रवासिनःकनकनामरुडकस्यममसर्वसत्त्वानांस्वस्तिसाहा ॥ १० ॥
 नजातुकुर्याद्विद्विद्विषायकायनवावाभनसापिवापि सुसादनीयंसह
 सानकृत्वा. तथा नदृष्टिग्रहणनननषां. ॐ दंप्रभीरुवचसंघवत्. नननसत्यन
 ॐ हायानुस्वस्तिसाहा ॥ ११ ॥ वजाचार्यमहाप्राज्ञः कनकनामवजिना. शु
 रुरुवकृत्वा. सिद्धिबलुधनायस. प्राप्रवक्तिसदासीत्वा. विद्विद्विद्वि
 कामार्थस्वस्तिसाहा ॥ १२ ॥ दानपत्रं कृत्वा मानस्य कनकनामरुडकस्य. राय

उदयान

पुणसद्विद्वत्स्य यथाभक्तानिखिलपापकामन. वाञ्छितसंप्राप्तिकामार्थ. दव
 नाचनुदयनकनारुडः १ मासवचनदा. लक्ष्मिगर्वासुखंवृद्धि. आनाग्यं त्रिपुल्लि
 नं. प्राप्ताभिमतसंपूर्ण. यत्पुण्यं गुरुनपद. नसर्वपविवाचस्य. निर्दोषादीय
 मायवः १ मन्त्री २ कनकदं वकारुदा नकस्य. ॐ दमाङ्गनिगृह २ स्वस्तिसा
 हा ॥ १२ ॥ धनमूलपूर्णायाय ॥ शु. नापाउसज्जुवावतय ॥ कृत्वा मानस्य कृ
 यमस्वानां यथाभक्तानिखिलपापकामार्थ ॥ ॐ स्वस्तिवः कनकां ४ ॥ ॐ अज्ज
 दीयादीयाविषाविषमहाप्रिय. हवकयवाहनायभक्तिपूर्विकनूः कृत्वा मान

विंश माहनि ३ आकृष्टमयकाय ३ महावात

स्यपूत्रय २ स्रस्त्रिहारा ॥ ॥ पूजाकुवि ॥ धनयूग्मवगकाय ॥ ॥ वाक पूजा
दशु विवतिविय ॥ मनुल (धनकं हानककन ॥ गुनपूजा ॥ दक्षिणा निसनाव
॥ दशुसमय ॥ ॥ कृष्णपन ॥ सकंकाकाय ॥ कलभाहिषक ॥ आशिर्वीद ॥ ॥
धनसपादुनि ॥ ॐ आः हवाशुकहवापनिमिनात्तु ॥ २ ॥ हं हं हं हं हं ॥ वृहि
दय ॥ ३ ॥ अनननुवितायांदि हनेवदिपरावय ॥ माधवाहि किनेरुका रुका
यामिववापनि ॥ वृक्षागजमहेश्वरः विष्णुवायूमहावत् ॥ कामदवहनि ॥ यैव
यदुहर्ष्यननगुहा ॥ पृथीपागधन ॥ यैव कूवननपनसुथा ॥ धर्मवाजाश्वम
ध

याम्य गन्धर्वास्तु वकिन्नवा ॥ जयहिंमनिदवा ॥ अकनिष्टनिवासिनि ॥ महा
वाजाहिनायव ॥ निर्वातवसवर्हिनि ॥ निर्वातवनिदवा ॥ शुद्धावा ॥ आयगमयव
॥ मावजि ॥ आकधकुम्भ ॥ महाधनुनिवासिनि ॥ वरुर्दिपहिनासत्वा ॥ किनायव
किष्ककुका ॥ राजनसत्त्वाका ॥ लदायुम्भ ॥ दय ॥ मृदिता ॥ मिहिनायव
विमलायायवपावगा ॥ धर्ममद्यानगमयव ॥ इर्जयाजागनायव ॥ इर्गमायाय
अका ॥ पुलाकार्यानिवासिनि ॥ अहिमूर्खिहिनायव ॥ साधुमनिमनायव ॥ दध
हमिध्वना ॥ आर्याष्टमीपूंगवः ॥ संवत् ॥ आवक ॥ यैव ॥ खन्नविधान ॥

पिनः॥ प्रकननकमीर्यश्च दवास्तनमनूयकाः। पीतिताहा मविभनन. न
गभज्जुमभुलं॥ स्वसिजानिरुतानि x ॐ जाः ॥ हं हवा मुक ॥ भाषा इति गृह
२ हं हं हं हं हं ॥ ॥ पूजा मुनि ॥ तर्पण ॥ क मापन ॥ ॥ नोदि द्वाय ॥ मभु
सपानाकल गहाय ॥ ॥ ॥ किमा न्ना इति जह विधि समापनं ॥ ॥ ॥
१ समस्त व ॥ २ वेतु मुकु सफ मि. मुकु वा नध क कू वृद्ध वा हा न वा सि क व
जाचार्य गीन न्द सिंद न न स्व ह क न लिखितं ॥ गुरु मे सु सर्व दा ॥ ॥ ॥

थन महावलि विय ॥ क ता व लिख व ना । यं का यं स वाय समभु तं नी लं ॥ क इय विनं
का न जा गा मि मभु सं न क । क स्या प वि हं का न रु य सी जा ताः ॥ सूतिका या इय विजा
का न जं व ह न भु तां ता ज रा ज नी । क रु रु का दि प वि पू नि तं । ॐ वं जां जी खं तां मां
पां गां का न जं न द धि सि र्ग प च्छ म ता प च्छ प दि प नू यं । वा ना रु जि न क लि ना मि
ना प न वि सी य मा क ना दि कं अ हि न व रा नू व र्ग ड व रू प रु नि लः ॥ क द्वा य प वि न
गं हं का न जं भु क क जं वि ति या म नि रु तं पा न द म ह मं द य मा नं वि रा वा । न इ
प वि ॐ का न जं व द म भु सं वि रा वा क स्या च्छ म भु ता जा नं प क न रू वि न न

५३ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीवचनार्थकोषे नवउमन्त्रेन वेवेवद्वारा श्रीवचनार्थसंसारवेवेवद्वारा ॥
 सिहिर्दमविग्रहिनादवादीनानीयसफकीनसमुडयः स्वसुगमादुषाकडे
 वसंस्तु। नयत। नयप्रकनादिवर्जवसुमधुसंवर्तववितिनमवसावमहाव
 तिविहाव ॥ श्रीकर्षत ॥ पाशादि ॥ दायादियूषां न्याम ॥ पूजासुते ॥ ॥
 ॐ नमः श्रीकृष्णाय ॥ दवासुनासर्वजुजंगसिद्धा। तादासुपूषु कटपूत
 नाया। गंधर्वयकाय रुजातयय्ययकविभुमीनिवसुनिदियाः ॥ नयकका
 नृपथी न सहं। रुजा ॥ तिविहययामिकासु ॥ सुकृपदावेः सहसुतसंधेः ॥ य
 त्वा ॥ दायाकुअनयसार्थ ॥ यमनृपथिनिवसुनिरुगाः ॥ यतन्दनवसुनानय

वयं वादयानं नविमधुसुव। नगषु सर्वेषु वयवसंसि। सवित्सु सर्वा सुवसंग
 मषु। नत्वा सयवापिकृताधिवामाः ॥ वापी नदागवृषपसुवषुः कृषंषु वयषु
 वनिर्मसुषु। यशमयाषवकाननषु सुनासयदवगृहषु व। विहागवेषु
 वसुथामेषु मथेषु मलासुवकलुनव। रुगाशुयविरुगृहवसुनि। नथ
 सुवीथिसुववत्तनषु यवकवृक्षपुत्रमहापथेषु महाभक्षनषु महाप
 थेषु। सिंहस्यकाधुविनासुयवसुनि। नसमसुवकीषु दीपषु दीपुकातया
 यमनाम ॥ नपवसुनियवद्वारापुननाशुगुगधमात्यं वृषं वसिदीपविधिं रवसु
 ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

सिं ब मा र को व महा वा ॐ कू ठा वा
हिनी फा ह न मा षु र श्री म न्दी ना स धि